भारतीय विचारक समिति द्वारा आयोजित साहित्यिक समारोह में बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–10.06.2017, समय–अप॰ 03:30 बजे, स्थान–बेनाझाबर, कानपुर)

भारतीय विचारक समिति के अध्यक्ष डॉ॰ जी॰एन॰ कौल जी, महामंत्री श्री उमेश चन्द्र दीक्षित जी, डॉ॰ अंगद सिंह जी, कार्यक्रम में उपस्थित कानपुर के सभी साहित्यकार, विद्वतजन, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

भारतीय विचारक समिति के 'रजत जयंती वर्ष' के अवसर पर आयोजित इस साहित्यिक समारोह में उपस्थित होकर मुझे काफी प्रसन्नता हो रही है। कानपुर के बुद्धिजीवी समाज द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी का केन्द्रीय विषय ''भारतीय संस्कृति एवं जीवन–मूल्यों के सम्वर्द्धन में कविता का योगदान'' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वस्तुतः किसी भी देश और समाज के निर्माण में समाज के प्रत्येक घटक, हरेक वर्ग अपने–अपने हिसाब से योगदान देते हैं। जहाँ तक साहित्यकारों की बात है, कवियों की बात है, मुझे लगता है, इनकी भूमिका दूरगामी प्रभाव डालने वाली होती है। कवियों के बारे में संस्कृत में एक श्लोक है –

'अपारे काव्य–संसारे कविरेव प्रजापति।''

–अर्थात् काव्य के अपार संसार में कवि ही प्रजापति हैं, जो अपनी रूचि के अनुरूप, विश्व या संसार की सर्जना कर लेते हैं। मतलब कवि को 'प्रजापति' जो कहा जाता है, उसका मतलब यही है कि वह देश की प्रजा के सुख–दुख सबका ध्यान रखता है, सबकी मंगलकामना करता है और देश के व्यापक हित में जो बातें होती हैं, जो सही रास्ता होता है, उसपर चलने के लिए देशवासियों को प्रेरित करता है। कहा जाता है कि–

''अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य (सूर्य) नहीं है

मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।''

–अर्थात् किसी भी राष्ट्र की जीवंतता और उसकी सांस्कृतिक समृद्धि, उसकी साहित्यिक निधियों पर निर्भर करती है। अंधकार दूर करने में आदित्य अर्थात् सूर्य की जो भूमिका है, वही भूमिका अज्ञानता दूर करने में साहित्य या साहित्यकारों की है। कवि या साहित्यकार सूर्य के समान होते हैं। कहा तो यहाँ तक गया है कि –''जहाँ न जाये रवि, वहाँ जाये कवि।'' अर्थात् ,जहाँ तक रवि–दृष्टि नहीं पहुँच पाती, वहाँ भी कवि–दृष्टि पहुँच जाती है। कवि–दृष्टि अन्तर्मन तक पहुँचकर हृदय में प्रेम का प्रकाश भरती है, भाईचारा का दीप प्रज्वलित करती है। हृदय की मलिनता को मिटाकर आनन्द और उत्साह का संचार करती है।

इतिहास साक्षी है कि पहले जब कवियों को राज्यश्रय प्राप्त था, राजाओं का सीधा संरक्षण मिलता था, तब भी कवि सिर्फ सोने की असर्फियाँ ही नहीं बटोरते थे। बल्कि वे समय–समय पर राजाओं को सही मंत्रणा देकर देश को गर्त में जाने से बचा लेते थे। भूषण जैसे कवि तो सीधे अपने राजा के साथ रणक्षेत्र में भी उतर जाते थे। श्रृंगारिक रचना करनेवाले बिहारी लाल ने भी जयसिंह को प्रजाहित के प्रति सावधान करते हुए कभी कहा था कि –''अली कली सो हीं बिंध्यों, तो आगे कौन हवाल?'' अर्थात् आप यदि राग–रंग में ही घिरे रहेंगे तो देश की क्या हालत होगी? कवि सच्चे राष्ट्रप्रहरी हुआ करते हैं। वे राष्ट्र की जनता को तो जगाये रहते ही हैं, राष्ट्रनायकों को भी पथ–विचलित नहीं होने देते। स्वतंत्र भारत में भी जब एक बार हमारे लोकतंत्र पर खतरा आया था, तो देश के सारे कवि जाग उठे थे। लोकनायक जयप्रकाश जी की 'सम्पूर्ण क्रांति' के दौर में लिखी गई धर्मवीर भारती जी की कविता 'मुनादी' आप सबने पढ़ी होगी। वे लिखते हैं–

खलक खुदा का, मुलुक बाश्शा का

हुकुम शहर कोतवाल का!

हर खासो–आम को

आगाह किया जाता है कि खबरदार रहें

और अपने–अपने किवाड़ों को

अन्दर से कुंडी चढ़ाकर बन्द कर लें

गिरा लें खिड़कियों के परदे

और बच्चों को बाहर सड़क पर न भेजें

क्योंकि एक बहत्तर बरस का बूढ़ा आदमी

अपनी काँपती कमजोर आवाज में

सड़कों पर सच बोलता हुआ निकल पड़ा है।''

–कवि धर्मवीर भारती जो 'धर्मयुग' पत्रिका के सम्पादक थे, की ये पंक्तियाँ 'आपातकाल' के उस दौर में एक मशाल–सी रौशनी जलाये क्रांतिकारियों के आगे–आगे चलती नजर आती थीं।

मित्रों, मैं कहना यही चाहता हूँ कि कविता, शुरू से हमारे भारतवर्ष में मनोरंजन या सिर्फ आनन्द का साधन नहीं रही है। कविता का जन्म ही हमारे देश में बाणबिद्ध हंस को देखकर हुआ था, जब आदिकवि बाल्मीकि के होठों से कविता अचानक फूट पड़ी थी। सुमित्रानन्दन पंत जी भी कहते हैं–

''वियोगी होगा पहला कवि

आह से ऊपजा होगा गान।

उमड़कर आँखों से चुपचाप

बही होगी कविता अनजान।।''

–मतलब यह कि कविता तो पीड़ा और वेदना पर ही जनमती है, उमड़ती है। वह पीड़ा चाहे किसी एक व्यक्ति की हो या समाज की हो या पूरे राष्ट्र की।

–मित्रों, आज विश्व में कवियों– साहित्यकारों की जबाबदेही पहले से भी ज्यादा गुरूतर हो गई है। पूरे विश्व में आतंकवाद के खतरे बढ़ गये हैं। भौतिकतावाद और बाजारवाद के दौर में तथा तकनीकी विकास के दौर में मनुष्य की अस्मिता ही संकटग्रस्त हो गई है। आज कवियों को इन तमाम बातों को लेकर देश और समाज का मार्ग–दर्शन करना है। वैचारिक स्वतंत्रता लोकतंत्र के लिए निहायत जरूरी है, परंतु इसके नाम पर हम अपनी राष्ट्रभक्ति को ही तिलांजलि नहीं दे सकते। राष्ट्र बचा रहेगा, देश की आजादी मजबूत रहेगी, तभी हमारी अपनी व्यक्तिगत आजादी का भी कोई मतलब रहेगा। आजादी का मतलब उदंडता और ऊधम नहीं। हमने आजादी हासिल की है आत्मसंयम से, आत्मानुशासन से, अपने सत्य और अहिंसा के बल पर, अपने दृढ़निश्चय और त्याग–तपस्या के बल पर। विदेशी आततायियों ने हमारी जानें लीं, हम बलिदान भी हुए, लेकिन हमारा सिद्धान्त है– हम पहले किसी पर हथियार नहीं उठाते। हम अपने राष्ट्र की रक्षा करना जानते हैं। हमारी राष्ट्रभक्ति भी हमें ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की प्रेरणा देती है। हम पूरी दुनियाँ में बंधुत्व और प्रेम को विकसित होते देखना पसंद करते हैं। हमारा संविधान भी हमें सर्वधर्म सहिष्णुता, सामाजिक समरसता और सद्भावना के प्रति संकल्पित बनाता है। आप कवि भी इन्हीं सब बातों की ओर हमें सजग–सचेष्ट करते हैं। आपकी भी राष्ट्रनिर्माण में महती भूमिका है।

आज जिन साहित्यकारों की पुस्तकों का विमोचन हुआ है, उन्हें मैं बधाई देता हूँ। मेरे संबोधन के बाद यहाँ 'कवि–सम्मेलन' होगा। आप सभी कवियों की बेहतरीन कविताएँ सुनेंगे। मैं ऐसे भव्य आयोजन के लिए डॉ॰ अंगद सिंह, श्री उमेशचन्द्र दीक्षित जी, श्री पी॰एन कौल एवं उनकी पूरी टीम को धन्यवाद देता हूँ। ऐसे आयोजनों से हमारी संस्कृति समृद्ध होती है और जीवन–मूल्यों का संवर्द्धन होता है। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।